अनुक्रमणिका

क्रम. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा और व्याकरण (Language and Grammar)	7
2.	वर्ण-विचार (Phonology)	12
3.	शब्द-विचार (Morphology)	19
4.	संज्ञा (Noun)	25
5.	लिंग (Gender)	32
6.	वचन (Number)	40
7.	सर्वनाम (Pronoun)	47
8.	विशेषण (Adjective)	55
9.	क्रिया (Verb)	63
10.	काल (Tense)	69
11.	संधि (Joining)	74
12.	समास (Compound)	80
13.	कारक (Case)	87
14.	उपसर्ग (Prefix)	94
15.	प्रत्यय (Suffix)	100
16.	अनेक प्रकार के शब्द (Different Type of Words)	106
17.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)	115
18.	विराम-चिह्न (Punctuation Marks)	123
19.	ई-मेल (पत्र-लेखन) (E-mail Letter Writing)	129
	स्वमूल्यांकन पत्र-1	133
	स्वमूल्यांकन पत्र-2	135

EDTONE INTERNATIONAL

अध्याय 1

भाषा और व्याकरण
(Language and Grammar)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए और उनके नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए।

शिक्षिका बच्चों को शांत करा रही हैं।

चौराहे पर सिपाही संकेत कर रहा है।

टी.वी. पर समाचार पढ़े जा रहे हैं।

नेता भाषण दे रहे हैं।

राकेश पुस्तक पढ़ रहा है।

बच्चे लिखकर परीक्षा दे रहे हैं।

बच्चो! आपने ऊपर के चित्रों में देखा कि किस प्रकार भाषा के विभिन्न माध्यमों को दर्शाया जा रहा है; जैसे– शिक्षिका बच्चों को चुप रहने को कह रही है, यातायात के नियमों को ट्रैफिक पुलिस के द्वारा पालन करवाया जा रहा है, टी.वी. पर समाचार पढ़े जा रहे हैं, नेताजी भाषण दे रहे हैं, राकेश पुस्तक पढ़ रहा है तथा बच्चे लिखित परीक्षा दे रहे हैं।

आप जानते हैं कि जब भाषा का आविष्कार नहीं हुआ था, तो लोग संकेतों से ही अपने सारे कार्य करते थे। आज भी ट्रैफिक का सिपाही यातायात का, नर्स चुप रहने का एवं अंपायर चौके–छक्के, आउट होने आदि का संकेत करते रहते हैं। इसलिए कुछ लोग यह कहते हैं कि संकेतों को भी भाषा कहा जा सकता है। परंतु भाषा में एक पूर्ण वाक्य बोला जाता है। वह व्याकरण की दृष्टि से भी शुद्ध होता है, ताकि हर कोई उसे समझ सके। इसलिए हम संकेत को भाषा नहीं कह सकते।

भाषा के रूप–

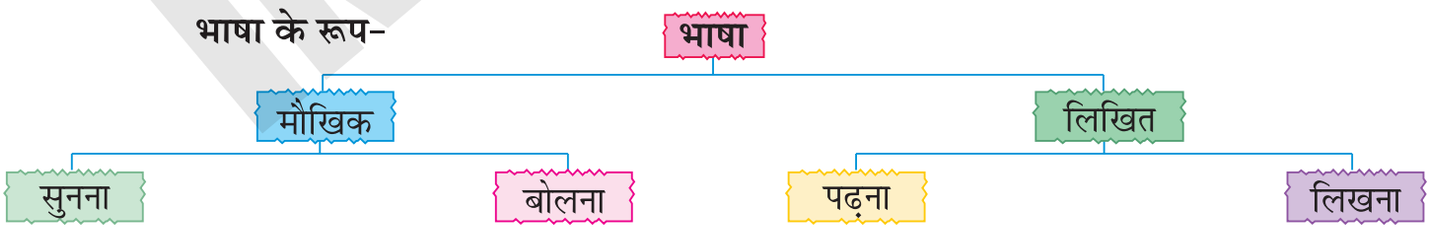

EDUCATIONAL WEBSITE

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि–

भाषा के द्वारा हम अपने मन के भावों या विचारों को दूसरों के समक्ष व्यक्त करते हैं और दूसरों के मनो-भावों को समझने व जानने का प्रयास करते हैं।

भाषा के चार कौशल होते हैं– सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना।

यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि हम सुनकर और पढ़कर दूसरों की बातों को समझने का प्रयास करते हैं। जबकि हम बोलकर तथा लिखकर अपनी बातों को समझाने का प्रयास करते हैं। विश्व में जितनी भी भाषाएँ प्रचलन में हैं, सभी इसी सिद्धांत का अनुकरण कर सीखी तथा सिखाई जाती हैं।

भारतीय संविधान में कुल 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। जो संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध हैं, जिनका विवरण निम्नवत् है–

1. असमिया	2. उर्दू	3. उड़िया	4. कन्नड़	5. कश्मीरी	6. कोंकणी
7. गुजराती	8. डोगरी	9. तमिल	10. तेलुगू	11. नेपाली	12. पंजाबी
13. बांग्ला	14. बोडो	15. मणिपुरी	16. मराठी	17. मलयालम	18. मैथिली
19. संथाली	20. संस्कृत	21. सिंधी	22. हिंदी।		

हिंदी भाषा और इसका संवैधानिक स्वरूप

भारतीय संविधान में अनुच्छेद 343(1) के अनुसार हिंदी हमारे देश की राजभाषा है। इस अनुच्छेद में यह व्यवस्था की गई है कि भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी और इसकी लिपि देवनागरी होगी। यह व्यवस्था 14 सितंबर, 1949 को की गई। यही कारण है कि प्रत्येक 14 सितंबर को देश में हिंदी दिवस मनाया जाता है।

लिपि

किसी भी भाषा की लिखावट लिपि है। सभी भाषाओं की अपनी-अपनी लिपियाँ होती है; जैसे- हिंदी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

कुछ भारतीय भाषाओं की लिपियाँ

भाषा	लिपि
गुजराती	गुजराती
पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू	अरबी/फ़ारसी
बांग्ला	बंगाली
उड़िया	ओड़िया

कुछ विदेशी भाषाओं की लिपियाँ

भाषा	लिपि
अंग्रेज़ी	रोमन
चीनी	चीनी
डच	रोमन
स्पेनिश	लैटिन

व्याकरण

प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है। इसी से भाषा की शुद्धता-अशुद्धता का निर्धारण किया जाता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि–

भाषा को अक्षरशः शुद्ध रूप में लिखने व बोलने का कार्य व्याकरण करता है। व्याकरण ही भाषा की शुद्धता मापन की कसौटी है।

इस प्रकार जिस भाषा का जितना समृद्ध व्याकरण होगा, वह भाषा उतनी ही अधिक समृद्ध होगी।

आइए, पुनरावृति करें

- भाषा व्यक्तियों के मनोभावों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है।
- भाषा दो प्रकार की होती है– मौखिक तथा लिखित।
- **लिपि**– भाषा को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है।
- हिंदी भारत की राजभाषा है। हम सभी हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।
- **व्याकरण**– भाषा को शुद्ध रूप में बोलना-लिखना व्याकरण के ज्ञान के द्वारा ही संभव है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को भाषा के संबंध में पढ़ाते हुए इसमें शामिल बारीकियों का ध्यान रखें तथा उससे बच्चों को अवगत कराएँ।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) भाषा के दो रूप बताइए।

(ख) व्याकरण किसे कहते हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भाषा से क्या तात्पर्य है?

(ख) हिंदी भाषा के संवैधानिक स्वरूप को लिखिए।

(ग) भाषा में लिपि का क्या महत्व है?

2. दिए गए चित्रों को पहचानकर उनमें प्रयुक्त भाषा के प्रकार लिखिए।

(क)

....

(ख)

....

(ग)

....

(घ)

....

3. दी गई भाषाओं को उनकी लिपियों से मिलाइए।

भाषाएँ	लिपियाँ
(क) अंग्रेज़ी	(i) देवनागरी
(ख) हिंदी	(ii) गुजराती
(ग) पंजाबी	(iii) देवनागरी
(घ) गुजराती	(iv) गुरुमुखी
(ङ) संस्कृत	(v) रोमन

4. दिए गए प्रश्नों के उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) भारत में कुल कितनी भाषाओं को संवैधानिक मान्यता प्राप्त है?

☐ 18 ☐ 20 ☐ 22 ☐ 30

(ख) हिंदी दिवस कब मनाया जाता है?

☐ 30 अगस्त ☐ 30 नवंबर ☐ 14 अगस्त ☐ 14 सितंबर

(ग) संस्कृत भाषा की लिपि कौन-सी है?

☐ खरोष्ठी ☐ देवनागरी ☐ त्रिवेणी ☐ अखिला

(घ) भाषा के कौशल में क्या-क्या शामिल हैं?

☐ लिखना ☐ पढ़ना ☐ सुनना ☐ ये सभी

(ङ) व्याकरण का क्या कार्य नहीं है?

☐ बोलने-लिखने में शुद्धता ☐ पढ़ने में शुद्धता

☐ भाषा की शुद्धता ☐ इनमें से कोई नहीं

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. कक्षा में अनेक स्थानों के मूल निवासी बच्चे पढ़ने आते हैं। उनकी मातृभाषा क्या है? एक चार्ट तैयार कीजिए।

बच्चों के नाम	मातृभाषा	बच्चों के नाम	मातृभाषा
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

EDITONE INTERNATIONAL

....

....

....

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. लड़का एवं लड़की को आपके क्षेत्र/प्रदेश में किस नाम से पुकारते हैं? जैसे–

....

....

प्रेरणादायक मूल्य

भाषा किसी भी मनुष्य के व्यक्तित्व का संपूर्ण परिचायक होती है। भाषा की समृद्धता और व्याकरण की शुद्धता व्यक्तित्व के विकास की मापक इकाइयाँ हैं।

EDITONE INTERNATIONAL

अध्याय 2

वर्ण-विचार
(Phonology)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! आपने प्राय: चिड़ियों को चहचहाते, हाथी को चिंघाड़ते, घोड़े को हिनहिनाते, गाय को रँभाते, मेंढक को टर्राते सुना होगा। ये सब विविध प्रकार की आवाज़ें निकालते हैं। किंतु इन सभी की आवाज़ों को वर्ण नहीं कहा जा सकता। क्योंकि ये आवाज़ें सार्थक वर्णों को नहीं दर्शाती, ये निरर्थक वर्ण होती हैं।

सार्थक ध्वनियाँ वर्ण कहलाती हैं। यह सबसे छोटी ध्वनि इकाई होती है, जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते।

वर्ण में वैसे तो सभी तरह की ध्वनियाँ आती हैं, किंतु सार्थक ध्वनियों को ही वर्ण कहा जाता है। इस आधार पर वर्ण को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

सार्थक वर्ण: जैसे– चिड़िया = च् + ई + ड़् + इ + य् + आ।
मकान = म् + अ + क् + आ + न् + अ।
बस्ता = ब् + अ + स् + त् + आ।
अध्यापिका = अ् + ध् + य् + आ + प् + इ + क् + आ।

निरर्थक वर्ण: निरर्थक वर्ण वे होते हैं, जिनका न तो कोई अर्थ होता है और न ही उस नाम की कोई वस्तु आदि होती है; जैसे–
सझम, ञाकज आदि।
इसके अलावा सभी पशु-पक्षियों की आवाज़ें भी इसी भेद में शामिल हैं। अब आइए, वर्ण-विच्छेद तथा वर्ण संयोग के बारे में जानने का प्रयास करते हैं–

वर्ण-विच्छेद

किसी शब्द के निर्मित होने में जितने भी वर्ण सम्मिलित होते हैं, उन सबको अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है; जैसे–

विद्यार्थी = व् + इ + द् + य् + आ + र् + थ् + ई
छात्र = छ् + आ + त् + र् + अ
विद्यालय = व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
संपर्क = स् + अ + म् + प् + अ + र् + क् + अ

EDITONE INTERNATIONAL

वर्ण संयोजन

भिन्न-भिन्न वर्णों को एकसाथ मिलाकर शब्द निर्माण की क्रिया को वर्ण-संयोजन कहते हैं; जैसे–

क् + अ + क् + ष् + आ = कक्षा

ग् + उ + ल् + आ + ब् + अ = गुलाब

ग् + इ + र् + ई + श् + अ = गिरीश

प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ = पुस्तक

वर्णमाला

वर्णों के व्यवस्थित एवं क्रमिक लेखन को वर्णमाला कहते हैं। हिंदी वर्णमाला में निम्नलिखित वर्ण शामिल हैं–

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
	ए	ऐ	ओ	औ			
व्यंजन	क	ख	ग	घ	ङ		
	च	छ	ज	झ	ञ		
	ट	ठ	ड	ढ	ण	(ड़, ढ़)	
	त	थ	द	ध	न		
	प	फ	ब	भ	म		
	य	र	ल	व			
	श	ष	स	ह			
संयुक्त अक्षर	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र			

इन वर्णों को विस्तार से जानने का प्रयास करते हैं–

स्वर: हिंदी वर्णमाला में 11 स्वर हैं– **अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ** तथा **औ**।

स्वर की परिभाषा: स्वर वे वर्ण होते हैं, जिनका उच्चारण स्वतंत्र एवं किसी अन्य वर्ण की सहायता लिए बिना होता है।

स्वर के प्रकार

ह्रस्व	दीर्घ	प्लुत
(अ, इ, उ, ऋ)	(आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)	(राऽम, ओ३म आदि)

ह्रस्व स्वर: जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से कम समय लगता है, ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इनकी संख्या चार है– अ, इ, उ तथा ऋ।

दीर्घ स्वर: इस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की तुलना में दोगुना समय लगता है। इनकी संख्या सात है– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ।

EDUCONE INTERNATIONAL

प्लुत स्वर: जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है प्लुत स्वर कहलाते हैं; जैसे– आऽऽ, ओ३म, राऽऽम आदि।

मात्राएँ– स्वरों के बदले हुए स्वरूप को मात्रा कहते हैं। मात्राएँ केवल स्वरों की होती हैं। जब भी व्यंजन के साथ स्वर का संयोग होता है, तो स्वर अपने मूल रूप की अपेक्षा चिह्न (मात्रा) के रूप में व्यंजन के साथ जुड़ जाते हैं। आइए, इसे निम्नवत् समझते हैं–

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा	×	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
मात्रायुक्त स्वर	कम	काम	किरण	कीमत	कुल	कूपन	कृपण	केसर	कैलाश	कोलार	कौरव

व्यंजन– जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

व्यंजन के प्रकार

- स्पर्श (क–प वर्ग+ड़+ढ़ = 27)
- अंत:स्थ (य, र, ल, व = 4)
- ऊष्म (श, ष, स, ह = 4)

स्पर्श व्यंजन: ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण के समय वायु कंठ, तालु, मूर्धा आदि को स्पर्श करती हुई बाहर निकल जाती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। स्पर्श व्यंजन निम्नवत् हैं–

क वर्ग	–	क	ख	ग	घ	ङ	
च वर्ग	–	च	छ	ज	झ	ञ	
ट वर्ग	–	ट	ठ	ड	ढ	ण	(ड़, ढ़)
त वर्ग	–	त	थ	द	ध	न	
प वर्ग	–	प	फ	ब	भ	म	

कुल 25 + 2 = 27

अंत:स्थ व्यंजन: ऐसे व्यंजन वर्ण, जिनका उच्चारण स्वरों तथा व्यंजनों के बीच किया जाता है, वे अंत:स्थ व्यंजन कहे जाते हैं। ये हैं– य, र, ल तथा व।

ऊष्म व्यंजन: ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय वायु मुँह में ही घर्षण करके ऊष्मा उत्पन्न करती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ये हैं– श, ष, स और ह।

आगत ध्वनियाँ

आगत ध्वनियाँ अर्थात् बाहरी या अन्य देशों की भाषाओं की ध्वनियाँ हैं। इनका शुद्ध उच्चारण करने या लिखने के लिए हिंदी भाषा में कुछ विशेष तरह के चिह्न लगाए जाते हैं, ताकि उन शब्दों का शुद्ध उच्चारण किया जा सके। ये निम्नवत् हैं–

EDUCONE INTERNATIONAL

अर्ध चंद्राकार (ॅ): अंग्रेज़ी एवं रोमन शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने के लिए अर्ध चंद्राकार का चिह्न (ॅ) लगाया जाता है। अर्ध चंद्राकार लगे कुछ शब्द निम्नवत् हैं–

Doctor	–	डॉक्टर	Mall	–	मॉल
Doll	–	डॉल	Call	–	कॉल
College	–	कॉलेज	Soft	–	सॉफ्ट

नुक़्ते का प्रयोग (.): उर्दू, अरबी, फ़ारसी तथा कुछ अंग्रेज़ी शब्दों के शुद्ध उच्चारण के लिए नुक़्ते का प्रयोग किया जाता है। नुक़्ते का प्रयोग वहीं किया जाता है, जहाँ नुक़्ते के बिना एवं नुक़्ते के साथ वाले शब्दों के अर्थों में भिन्नता हो; जैसे–

बाग	–	लगाम	बाग़	–	बगीचा
राज	–	राज्य संबंधी	राज़	–	रहस्य
सज्जा	–	सजावट	सज़ा	–	दंड
फन	–	साँप का फन	फ़न	–	हुनर

अयोगवाह: अयोगवाह वे वर्ण होते हैं, जिनका प्रारंभ तो स्वर से होता है, किंतु इनके अंत में व्यंजन ध्वनि आती है; जैसे– अं = (अ + ङ्) अः = (अ + ह)

अनुनासिक या चंद्रबिंदु (ँ) : इस ध्वनि का उच्चारण नाक और मुँह दोनों से किया जाता है; जैसे–

हँसना, मुँह, काँपना, आँगन, आँचल, चाँद आदि।

संयुक्ताक्षर

हिंदी वर्णमाला में चार वर्ण संयुक्ताक्षर हैं। ये हैं– क्ष, त्र, ज्ञ तथा श्र। इनका निर्माण दो-दो व्यंजन वर्णों से हुआ है, ये इस प्रकार हैं–

क्ष = (क् + ष);	त्र = (त् + र);	ज्ञ = (ज् + ञ);	श्र = (श् + र)।
अक्षर	नक्षत्र	ज्ञानी	श्रमिक

द्वित्व व्यंजन

जब एक ही व्यंजन लगातार दो बार प्रयुक्त होकर किसी शब्द का निर्माण करता है, तो वह द्वित्व व्यंजन कहलाते हैं; जैसे–

त्त	=	कुत्ता, पत्ता, सत्ता	न्न	=	प्रसन्न, अन्न, पन्ना
क्का	=	पक्का, टिक्का, मक्का	ल्ल	=	लल्लू, पल्लू, पिल्ला
म्म	=	अम्मा, सम्मान, सम्मन	च्च	=	बच्चा, सच्चा, कच्चा

EDITONE INTERNATIONAL

'र' वर्ण के विविध रूप

हिंदी वर्णमाला में 'र' एक ऐसा व्यंजन वर्ण है, जिसके तीन रूप प्रचलित हैं।

(क) **रेफ़ (र्‍) :** 'र' वर्ण का एक प्रकार का रूप रेफ़ (र्‍) है। यह तब व्यवहार में लाया जाता है, जब किसी शब्द में 'र' वर्ण 'अ-रहित' रूप में प्रयोग हुआ हो; जैसे–

क् + अ + र् + म् + अ = कर्म।

अ-सहित अ-रहित अ-सहित

(ख) **पदेन (्र) :** किसी शब्द में जब 'र' वर्ण 'अ-सहित' प्रयुक्त होता है, तो वहाँ पदेन अर्थात् 'पद या पैर' में लगता है; जैसे–

क् + र् + अ + म् + अ = क्रम।

अ-रहित अ-सहित अ-सहित

(ग) **ट, ठ, ड एवं ढ वर्णों के साथ:** ट, ठ, ड या ढ के साथ 'र' वर्ण से युक्त शब्द बनने पर 'र' वर्ण का रूप ट, ठ, ड में (्र) इस प्रकार हो जाता है। यह तभी होता है, जब 'र' वर्ण 'अ-सहित' हो। जैसे–

ड् + र् + अ + म् + अ = ड्रम।

अ-रहित अ-सहित अ-सहित

आइए, पुनरावृति करें

- सार्थक ध्वनियाँ ही वर्ण हैं।
- **वर्ण दो प्रकार** के होते हैं– सार्थक एवं निरर्थक।
- हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण होते हैं– स्वर-11, अयोगवाह 2, व्यंजन (33 + 2 = 35), संयुक्त अक्षर-4।
- स्वर के तीन भेद होते हैं– ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत।
- व्यंजन के तीन भेद हैं– स्पर्श, अंत:स्थ तथा ऊष्म।
- **अयोगवाह**- ये दो प्रकार के होते हैं– अं तथा अ:।
- 'र' वर्ण के तीन रूप होते हैं– रेफ़, पदेन तथा ट, ठ, ड वर्णों के साथ।

अध्यापन संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में छात्रों को वर्ण को उसके विविध भेद तथा स्वरूपों के साथ प्रायोगिक तथा व्यावहारिक रूप से समझाएँ।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वर्ण कितने प्रकार के होते हैं?

(ख) स्वर के भेद बताइए।

(ग) व्यंजन के कितने भेद होते हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) वर्ण से क्या तात्पर्य है?

(ख) वर्ण-विच्छेद से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ग) रेफ़ कब लगाया जाता है? उदाहरण भी दीजिए।

2. दिए गए शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए।

(क) विद्यालय = ...

(ख) अध्यापक = ...

(ग) कक्षा = ...

(घ) कहानी = ...

(ङ) महिलाएँ = ...

3. दिए गए वर्णों से वर्ण-संयोग करके नया शब्द बनाइए।

(क) क् + अ + व् + इ + त् + आ = ...

(ख) व् + अ + र् + ण् + अ + म् + आ + ल् + आ = ...

(ग) उ + द् + य् + आ + न् + अ = ...

(घ) व् + इ + द् + य् + आ + र् + थ् + ई = ...

4. दिए गए शब्दों में सही स्थान पर नुक्ता लगाइए।

सजा	बाग	राज	खाना	फन
साफ	कर्ज	हररोज	खुशफहमी	हमसफर

5. दिए गए शब्दों में उचित स्थान पर चंद्रबिंदु (ँ) लगाइए।

चाद	आचल	हसना	मेहदी	कापना
टाग	तागा	कुआ	भाग	गवार

EDTONE INTERNATIONAL

6. इनसे दो-दो शब्द बनाइए।

क्क = ...

त्त = ...

द्य = ...

च्च = ...

म्म = ...

त्य = ...

7. दिए गए संयुक्त अक्षरों से दो-दो शब्द बनाइए–

(क) क्ष = ...

(ख) त्र = ...

(ग) ज्ञ = ...

(घ) श्र = ...

सोचें-विचारें

Critical Thinking

8. आगत ध्वनियों से संबंधित विभिन्न प्रकार के शब्दों को एकत्रित करें तथा उन्हें विभिन्न भागों में वर्गीकृत करें।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

9. इनमें से किसकी बोली वर्ण नहीं कही जा सकती है? सही का निशान लगाइए।

काँव-काँव

कैं-कैं

टें-टें

बाँ-बाँ

देखो! चिड़िया बैठी है।

मम्मी! मेरे जूते कहाँ हैं?

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार वर्ण सार्थक ध्वनियाँ होती हैं ठीक उसी प्रकार मनुष्य को भी उन सार्थक ध्वनियों का उचित प्रयोग करना चाहिए ताकि उनकी विलक्षणता प्रदर्शित हो।

EDITION INTERNATIONAL